WHO - भारत छोड़ो

1. WHO फार्मा कंपनियों , तंबाकू उद्योग, परमाणु ऊर्जा उद्योग और जीएमओ जैसे गंभीर नुक्सान पहुंचाने वाले उद्योगों को प्रोत्साहित करता है ।

- WHO फार्मा कंपनियों के टीकों और दवाओं के लिए ग्लोबल मार्केटिंग और डिलीवरी एजेंट बन गया है। आज, WHO के बजट का 80% अमेरिकी सरकार, फार्मा कंपनियों और बिल और मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन से आता ह जो डब्ल्यूएचओ की नीतियों को नियंत्रित करते हैं।
- स्वाइन फ्लू 'नकली' महामारी - 2010 में, डब्ल्यूएचओ , फार्मा कंपनियों और यूरोपीय संसदीय समिति की मिलिभगत थी जिससे खतरनाक दवाओं और टीकों को बेचा जा सके।
- इंडियन बार एसोसिएशन द्वारा 7 जनवरी 2022 को WHO और WHO के महानिदेशक डॉ टेड्रोस एडनॉम घेब्रेयसस और मुख्य वैज्ञानिक डॉ सौम्या स्वामीनाथन को नोटिस भेजा गया है। यह नोटिस उनके गलत काम और फार्मा कंपनियों जैसे बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन, जीएवीआई, द रॉकफेलर फाउंडेशन, सनोफी, जीएसके, मर्क नोवार्टिस और पर्ड्यू जैसे भ्रष्ट संगठनों के साथ गठजोड़ के चलते दिया गया है।

2. बिग फार्मा एजेंडा के अनुरूप निम्नलिखित परिभाषाएँ बदली गईं:

- महामारी - स्वाइन फ्लू के फैलने से पहले 2009 में महामारी की परिभाषा को बदल दिया गया था। जिसके चलते अब कोई भी साधारण फ्लू एक महामारी हो सकता है और सभी देशों को डब्ल्यूएचओ के इशारे पर काम करने एवं टीके के लिए बाध्य किया जा सकता है।
- हर्ड इम्युनिटी - नई परिभाषा के अनुसार हर्ड इम्युनिटी (नेचुरल इम्युनिटी) की भूमिका को नजरअंदाज करते हुए टीकाकरण के जरिए ही इसे हासिल किया जा सकता है।
- बीमार आदमी - बिना लक्षण के लोगो को भी बीमार घोषित करने के लिए इसे बदल दिया गया और एक नए शब्द का उद्घोष हुआ - "एसिम्पटोमैटिक" इसके पहले केवल लक्षण वाले व्यक्तियों को ही बीमार माना जाता था
- वैक्सीन - कोवीड वैक्सीन एक जीन थेरेपी है जो वैक्सीन की पारंपरिक परिभाषा के अनुकूल नहीं है।

3. WHO की जानलेवा आपराधिक सिफारिशें :

- उन्होंने इस तथ्य को छिपाया कि कोविड के गलत उपचार और चिकित्सा प्रोटोकॉल से गंभीर परिणाम हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, यह साबित हो चुका है कि रेमडेसिविर इंजेक्शन लिवर और किडनी को नुकसान पहुंचाता है
- WHO द्वारा प्रस्तावित वैश्विक महामारी संधि, ग्लोबलिस्ट कबाल द्वारा दुनिया भर में स्वास्थ्य प्रणालियों पर एकाधिकार करने के लिए एक और हमला है। सुधार की आड़ में डब्ल्यूएचओ अपने सदस्य राज्यों पर अपनी कानूनी जबरदस्ती थोप सकता है।
- आरटीपीसीआर परीक्षण, इसके आविष्कारक, कैरी मुलिस के अनुसार, केवल शोध के लिए उपयोग किया जा सकता है, निदान के लिए नहीं। यह परीक्षण चलाने के लिए उपयोग किए जाने वाले सीटी मानक के आधार पर काफी गलत निष्कर्ष देता है। फिर भी, WHO ने कोविड के निदान के लिए इस परीक्षण की सिफारिश की थी। बिना लक्षणों के लोगों का बेतरतीब ढंग से परीक्षण किया गया और इस टेस्ट के आधार पर कई स्वस्थ्य लोगों को क्वारंटाइन करने को मजबूर किया गया, उनके साथ बदसलूकी की गयीं।
- कोविड के टीकों को सुरक्षित और प्रभावी कहना जबकि वे प्रायोगिक (एक्सपेरिमेंटल) हों और गंभीर नुकसान पहुंचाते हों और मृत्यु का कारण बनते हों । वर्तमान कोविड टीकों से लाखों लोगों ने प्रतिकूल प्रभाव झेले हैं जैसे कि - प्रणालीगत मांसपेशियों में दर्द, बेल्स पाल्सी, गुइलेन बैरे सिंड्रोम, न्यूरिटिस, पुराना दर्द, पेरेस्टेसिया, सूजन आंत्र रोग, मायोकार्डिटिस, घनास्त्रता (रक्त के थक्के), थ्रोम्बोसाइटोपेनिया और नार्कोलेप्सी, एक पुरानी न्यूरोलॉजिकल बीमारी जो विशेष रूप से किशोरों को प्रभावित करती है। हालांकि, WHO और प्रमुख चिकित्सा पत्रिकाओं ने वैज्ञानिकों की रिपोर्ट प्रकाशित करने से इनकार कर दिया है।
- WHO ने भारतीय आरटीआई के अनुसार, इसकी प्रभावशीलता और सुरक्षा को साबित करने के लिए कोई अध्ययन नहीं होने पर भी मास्क पहनने की सिफारिश की। दूसरी ओर, बड़ी संख्या में ऐसे अध्ययन हैं जो साबित करते हैं कि ये मास्क अत्यधिक खतरनाक हैं और इनसे अस्थमा, फाइब्रोसिस और कैंसर जैसी गंभीर बीमारियां हो सकती हैं।
- लॉकडाउन, मास्क, क्वारंटाइन जैसे अत्याचारी तरीकों को अनिवार्य किया गया जिसके परिणामस्वरूप लोगो को आजीविका और भुखमरी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा। मीडिया का इस्तेमाल झूठ, डर पैदा करने और दहशत फैलाने के लिए किया गया जिनसे फार्मा कंपनियों को फायदा पहुंचे।

अजिंक्य - 9321234861 | चेतन - 8879592924 | हेमंत – 8830398392

अपडेट के लिए टेलीग्राम चैनल से जुड़ें: t.me/awakenindiamovement